## चित्त शोधन अष्ट कारिका

मैं सभी सत्त्वों को
चिन्तामणि से भी बढ़कर।
परम अर्थ की सिद्धि के आशय से
नित्य परम प्रिय के रूप में ग्रहण करुँ।। 1।।

किसी अन्य के संग व्यवहार करते हुए
मानूँ स्वयं को निम्नतम
और अपने ह्रदय की गहराइयों से ,
सम्मान से मानूँ अन्य को श्रेष्ठ ।। 2 ।।

अपने हर आचरण में मैं
अपनी चित्त का परीक्षण करुँ ।
और स्व-पर हानिकारक क्लेश उत्पन्न होते ही
उनका बलपूर्वक सामना कर प्रहाण करुँ ।। 3।।

जब मैं दुष्ट प्रवृति के सत्वों को देखूँ
प्रबल पाप और पीड़ा द्वारा दमित ।
क्योंकि वे दुर्लभ हैं, उन्हें इस तरह प्रिय समझूँ
मानो मुझे रत्न निधि प्राप्त हुई हो ।। 4।।

मेरे प्रति कोई अन्य ईर्ष्यावश
गाली-गलौज निन्दा आदि अनुचित व्यवहार करें।
तो भी मैं पराजय को धारण कर
विजय दूसरों को अर्पित करुँ।। 5 ।।

जिस पर मैंने उपकार किया
और जिससे बड़ी अपेक्षा रखता हूँ, यदि वह।
अत्यन्त अनुचित रूप से हानि पहुँचायें, तब भी मैं
उसे परम कल्याणमित्र के रूप में देखूँ।। 6 ।।

संक्षेप में , मैं लाभ व आनंद दे सकूँ
प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से अपनी सभी माँओं को
और निज पर गुप्त रूप से ले लूँ
अपनी सभी माँओं की दुख व पीड़ा ।। 7 ।।

यह सभी मलिन न हो
आठ लोक धर्म के दाग से
और सभी धर्मों को माया जानकर
लालसा की बन्धन से मुक्त हों ।। 8 ।।

हिन्दी अनुवाद

राजी रमणन्